मासिक—

6
80

मानव मन्दिर

सम्पादक :— एम. आर. भक्त
पी. एस. ई (रीटार्यड)

वर्ष 7 | मंगल वार 10 जून 1980 | संख्या 2

दयामय अब तो कीजे दाया

माया कर्म से जीव दुखारी भव के फांस फँसाया
छूटन की कोई राह न सूझे, भूल भरम भरमाया
अबल निबल में शक्ति कहाँ है, वो तो दीन दुखारी
अपने बल तुम आन छुड़ाओ जग जीवन हितकारी
त्राह त्राह कर चरण कमल में, होय अचेत प्रभु आयो
राधास्वामी चरण शरण बलिहारी यम, का फन्द कटायो।

ये शब्द जो पढ़ा गया, मैंने सुना। मैं सन्तमत को हां में हां मिलाने वाला नहीं हूं। बल्कि सन्तमत को साफ करता हूं। दाता ने यही कहा था।

जब लग न देखो अपने नैना,
कभी न मानो गुरु के बैना।

मैं सोचता हूं फकीर चन्द! तुम ने पाखन्ड का जाल रच लिया, सत्संग कराता है, इस बाणी में गुरु की जो स्तुति की गई है कि हम पर दया करो,

मैं अपनी आत्मा से कहता हूं ! फकीर चन्द, यहां अपने झूठे मान के लिये पाखन्ड व जगा, 94 साल का हो गया, एक दिन तो आयेगा जब यहाँ नहीं रहेगा। और अधिक से अधिक दो चार या 6 साल जी लेगा, फिर चलना है मर जायेगा। सच बता, कोई गुरु दया कर सकता है ? मान लो मैं इस काबिल नहीं तो और गद्दियों के लाखों सत्संगी हैं।

वो दुखी नहीं होते, क्या वो अपने गुरुओं से शिकायत नहीं करते क्या उनकी मुसीबतें दूर हो गई ? साफ शब्दों में मेरा प्रश्न ये है कि ये सन्तमत क्या बला है ? हम, ब्राह्मण थे, हिन्दु थे, आशा थी कि अमुक को पूजेंगे, देवी, राम, कृष्ण, या किसी और को मथ्था टेकेंगे तो हमारे दुख दूर हो जायेंगे। किताबों में लिखा हुआ है और लोगों ने कहानियां बना कर सुनाई। जब मैं पंथ में आया इन में गुरु के विषय में भी वही बात थी। अब मैं सोचता हूं। अब तुम बताओ क्या दया कर सकते हो ?

मैंने जो समझा वो कहता हूं कि ऐ, इन्सान ! अपने पर दया करने वाला तू आप है। कोई आदमी

तुम पर दया नहीं कर सकता, हां गुरु तुम को उस दया का भेद दे सकता है; राज़ दे सकता है, जिस भेद को पाने से या उसको समझ जाने से या उस पर अमल करने से तुम दया के पात्र बन सकते हो। ये मैंने समझा है। मैं शायद ग़लत हूं, मैं सब गुरुओं को इजाज़त देता हूं कि वह मेरी ज़िन्दगी में अगर कटाक्ष कर जाये तो मैं बड़ा खुश हूंगा। वे सबूत दें कि मैं ग़लत हूं। और अगर मेरे मरने के पश्चात कुछ कहें तो कोई लाभ नहीं होगा। मैं कहता हूं ऐ, इन्सान! तुझ पर दया करने वाली तेरी अपनी ज़ात है। तू आप है।

अब सवाल ये है कि वो दया क्या है? सन्तों की दया केवल ये है कि इन्सान के मन के अन्दर जो चिन्ता, फिक्र, ग़म और हेराफेरी यानी अशान्ति पैदा करने वाली हलचल या हलचल है ये न हो और उसको शान्ति मिल जाये। सन्तों की तालीम का यह सारा निचोड़ है। बाकी रह गया सवाल दौलत का या पुत्र का, अरे बाबा! इन सन्तों के अपने बच्चे नहीं रहे तो तुम कैसे आशा कर सकते हो कि सन्त तुम्हारे बच्चों को बचा जायेंगे। सोचो मेरी बात को। हजूर महाराज सालिगराम जी के लड़के

मर गये, अगर स्वामी जी में ताकत होती तो वो उनको न मरने देते। किताब में यह लिखा हुआ है कि हजूर महाराज का लड़का गुज़र गया वो आये, स्वामी जी बड़े अफसोस में बैठे थे, कहने लगे महाराज, आप क्यों अफसोस में बैठे हैं।

कहने लगे तुम्हारा लड़का गुज़र गया है। हजूर राय सालिग राम जी ने कहा मुझे कोई दुख नहीं। तब स्वामी जी ने कहा अच्छा, हम भी अफसोस नहीं समझते। दुनिया में रोचक और भयानक बातें बता कर लोगों को जाल में फँसाया

हुआ है। मैं नहीं फँसाना चाहता। मैं तो जीवों को आज़ाद कर जाना चाहता हूं ताकि तुम लोग इस आशा में न रहो कि मरते ससय कोई गुरु तुम को आकर ले जायेगा या कोई गुरु तुम को पुत्र दे देगा। ये तुम भूल में हो। जिस को जो कुछ मिलता है वो उसके अपने विश्वास व श्रद्धा का या उसके पिछले कर्मों फल का मिलता है। कोई महात्मा, कोई गुरु, कोई राम, कोई कृष्ण, किसी को कुछ नहीं कर सकता। ये सब एक भ्रम है। मगर लोग तो वहां

खुश होते हैं जहां उन को ग़लत और झूठे वायदे दिये जाते हैं और जहां सब्ज़ बाग़ दिखा करके अपने पीछे लगाया जाता है और हम गरीबों ने इस अज्ञान में आकर अपने बच्चों के पेट काट कर स्थान स्थान पर मन्दिर, गुरुद्वारे और गिरजाघर बना दिये। यह समझ कर कि राम जो दशरथ के घर में पैदा हुआ वो आकर हमारी सहायताकरेगा। राम, कृष्ण, गुरु, सतगुरु, जो कुछ भी है, यह तुम्हारे मन में रहता है। तुम्हारा विश्वास है, तुम्हारी श्रद्धा है और तुम्हारा यकीन है अगर वो पूरा है. तो तुम्हारा काम हो जायेगा, ये मैं ने अपने जीवन में समझा है।

दयामय अब तो कीजिये दाया

जीव निबल है अज्ञानी है, वो एक सहारा चाहता है, इसलिये पुकार करता है। मगर जिसके आगे वह पुकार करता है उसकी क्या ड्यूटी है कि धीरे २ उसके दिमाग, को साफ करके सचाई समझाकर उसको शान्ति दिला दे। ये गुरु की ड्यूटी है। नहीं तो इन गुरुओं और महात्माओं ने ऐसा हम ग्रहस्थियों को धोखा दे कर चक्कर और वहम में डाला हुआ है कि न हम इधर के रहे न हम उधर

के रहे। ये जो गुरु धारण करना है लोग समझते हैं कि गुरु से नाम ले लिया बस, हम तर गये, ये बिल्कुल झूट है। मेरे साथ न बीती होती मैं कभी ऐसा न कहता।

आजकल इन महात्माओं ने तो अपनी अपनी टोलियां बना बना कर अगली जो थोड़ी बहुत शान्ति थी उसको भी मिटा दिया। यह दायरे बना जाना तो कलियुग का एक खेल और तमाशा है और कुछ नहीं।

दया मय अब तो कीजिए दाया।
माया करम से जीब दुखारी, भव के फांस फंसाया।

माया कर्म मा का अर्थ है मापना, या का अर्थ यन्त्र। जिस चीज़ से कोई वस्तु मापी जाती है वह है माया और वह है हमारी बुद्धि। हम अपनी बुद्धि से ही दुःखी होते हैं और अपनी अक्ल से ही सुखी होते हैं। मैं जब बग़दाद से आया तो बस्ता लिए हुए ट्रेनिंग के लिए लायलपुर जा रहा था? मेरी एक कंवारी लड़की थी शब्द प्यारी'। रास्ते में डाकिया मिला उस ने चिट्ठी दी कि लड़की शब्दप्यारी मर गई। मैंने बस्ता ज़मीन पर रख कर घुटने टेक

कर दाता दयाल का धन्यवाद किया कि मेरे सिर का बोझ उतर गया। औरत रोती रही। तो मैंने खुशी क्यों प्राप्त की ? केवल इस ख्याल से कि अपने ही ख्याल से अपने मन बुद्धि के चक्र में आकर रोता है और तो कुछ नहीं। किसी समय बात कुछ है हम यूं ही वहम में आ जाते हैं अपने आप फँस जांते हैं। इस का इलाज ? सिर्फ यह ज्ञान और यह दृढ़ निश्चय कि हमारे मन के अन्दर जितने संकल्प व ख्याल उठते हैं, जाग्रत में या स्वप्न में, यह सत नहीं हैं, हकीकत नहीं है बल्कि असत्य है। जब तक इन्सान को यह यकीन नहीं है तब तक कोई खुदा मियां चाहे आप चल कर यहां गुरु बन कर आ आजाए असको शान्ति नहीं मिल सकती। मैं भी तो माया का ही मारा हुआ हूं। 1905 ई० में मैं बहुत दुःखी था राम को मिलना चाहता था। चौबीस घन्टे रोया। एक स्वप्न में ख्याल आय। जो दाता दयाल के चरणों में ले गया।

सारी जिन्दगी मैंने उस एक माया के फेर में। गुजार दी और यह भी माया का फेर है जो इस समय

जाए उस को शान्ति नहीं मिल सकती। मैं भी तो माया का ही मारा हुआ हूं। 1905 ई० में मैं बहुत दुखी था, राम को मिलना चाहता था। चौबीस घन्टे रोया, एक स्वप्न में ख्याल आया जो दाता दयाल के चरणों में ले गया सारी ज़िन्दगी मैंने उस एक माया के फेर में गुज़ार दी और यह भी माया का फेर है जो मैं इस समय कर रहा हूं। माया ही हिन्दू शास्त्रों के अनुसार इन्सान को फंसाती है और माया ही अज़ाद करती है। कुमति या बुरी बुद्धि ही इन्सान को फंसाती है। सुमति या अच्छी बुद्धि जीव को आज़ाद करती है। इस लिए बार बार हुक्म है कि किसी पहुंचे हुए इन्सान का जो स्वयं सुलझा हुआ हो सत्संग करना चाहिए वरना दूसरे गुरु वाद को परदे में रख कर तुम को फंसा देंगे। जब तक किसी को यह विश्वास नहीं आ जाता कि गुरु जो है यह ज्ञान है और जो कुछ तुम्हारे अन्दर फुरना फुरती है, ख्याल निकलता है अच्छा या बुरा, यह सब माया हैं। तब तक कोई गुरु, कोई महात्मा, कोई ईश्वर, कोई परमेश्वर तुम को दुःख सुख से नहीं बचा

सकता ! नहीं बचा सकता ! नहीं बचा सकता ! यह बात सच्ची है। यह है हकीकत, जो गुरु की हैसियत से मैं आप लोगों पर दया कर सकता हूं।

माया करम से जीव दुःखारी भव के फांस फंसाय।

आदमी यहां पर अपने ही कर्मों और अपने ही विचारों की धार से दुःख और सुख मनाता है। तो जीव प्रार्थना करता है कि ऐ मालिक ! ऐ सत गुरु ! दया कर। हम लोग सारे अपने ही कर्म से दुःखी हैं। तो जो दया गुरु कर सकता है वह मैं अपनी बुद्धि के अनुसार करना चाहता हूं और वह यह है कि ऐ इन्सान ! तेरे अन्दर जितने ख्यालात पैदा होते हैं अच्छे या बुरे यह सब माया है। जब तक तुम अपने इन मन के विचारों को सत मानते रहोगे तुम्हारे लिए नाम नहीं है, नहीं है, नहीं है। इन गुरुओं ने जो सब को नाम दिया है हम को बेवकूफ बना कर नाम दिया है। जो असल बात थी वह नहीं बताई और अगर झूठ न मानो तो लोगों को भी असली बात को सुनने की ज़रुरत

नहीं है। वह परमार्थ के लिए नहीं आते। वह तो अपने ही मतलब और गरज के लिए आते हैं।

दया मय अब तो कीजिए दाया।
माया करम से जीव दुःखारी भव के फांस फंसाया॥
छूटन की कोई राह न सूझे भूल भरम भरमाया॥

आज जब यह शब्द सुना तो मेरे दिल में यह ख्याल आया कि फकीर चन्द! तुम हर एतवार को, हर महीने या अब बैसाखी आई है, हजारों आदमी इकट्ठे होंगे, तुम दुनियां को क्या बता सकते हो, जिस से कि दुनियां के दुःख जाते रहे। दुखों और सुखों का मनाना या न मनाना मन के बस में है। मन के चक्कर और झगड़ों में ही आदमी दुःखी और सुखी होता है। मेरा 12-13 साल का एक लड़का मर गया। मेरा दो सेर खून बढ़ गया और मेरी औरत तीन साल स्यापा करती रही और मैं लड़के की लाश के साथ तक नहीं गया। क्यों कि ख्याल की तबदीली। मैं सोचता था मेरी इमानदारी की जिन्दगी है। यह

बच्चे हो गए। इन को रोटी कहां से मिलेगी। पढ़ाऊँगा कहां से। क्या करूंगा ? इसी लिए दाता ने कहा था कि तुझे मालिक पर यकीन नहीं ? जो कुछ करेगा तेरे वास्ते अच्छा करेगा। लड़का मर गया यार खुश हो गए। जिम्मेवारी खतम हो गई। तीन लड़कियां मर गईं बहुत खुश हुआ। कहां से पैसा लाता ? कहां से शादियां करता। मैं तो खुले तौर पर भाषण करता हूं, मैं संत सतगुरु बक्त हूं, दया करता हूं। मगर गुरु की सेवा कोई नहीं करता। गुरु की सेवा है क्या ? सत्संग में जा कर जिस तरह तुम यहां बैठे हो, जो कुछ मैं कहता हूं, सुन कर अपने घर में जा कर विचार करो कि मैं क्या सच्च बोलता हूं या झूठ बोलता हूं। यह है गुरु की सेवा।

इस से बहुत ऊंची गुरु की सेवा एक और यह है कि गुरु को अपने से अलग न समझना, बस यह है गुरु की अन्तिम सेवा। दुनिया दारों के लिए असली गुरु सेवा यह है जो तुम इस वक्त कर रहे हो। मेरे पास कई आदमी आते

हैं। सत्संग के वक्त तो आते नहीं, दोपहर को मेरी जान खाते हैं। दोपहर को आने से उन्हें क्या लाभ होगा।

अबल निबल में शक्ति कहां है, वह तो दीन दुखारी।

निबलता का अर्थ है शरीर की कमजोरी। अबलता का अर्थ है मन की कमजोरी। निबल वह है जिसकी सेहत ठीक नहीं है। उस का ज्यादा कारण क्या है, कुछ तो कर्म, बीमारी और कुछ हमारा विषय भोग का कमाना और अबल वह है जिस को ज्ञान नहीं है जब ज्ञान हो जाता है तो शारीरिक ताकत उस की यदि चली भी जाए तो घबराता नहीं। क्यों कि वह मानसिक अवस्था से परे जा के अपने रूप को जानता है कि मैं न मरने वाला हूं न मुझे कोई मार सकता है। मै तो अजर अमर और अविनाशी हूं और मालिके कुल की अंश हूँ। कबीर साहेब कामी को कहते हैं।

कामी कभी न गुरु भजे और नाम गुरु का लेय।

क्यों ? क्यों कि वह तो काम का मारा हुआ है याद आएगा तो काम याद आएगा तो गुरु को कैसे भजेगा ? इस वास्ते मैंने आवाज़ उठाई है कि 24 साल के पहले किसी लड़के की शादी न की जाए। शर्त यह है कि वह अपना चाल चलन ठीक रखे। और वीर्य की रक्षा करे। गुरु यह दया कर सकता है। आप की हालत आप की परिस्थितियों को देख कर सच्ची बात बता कर आप के हालात के अनुसार आप को बदल सकता है जिस प्रकार मुझ को दाता ने बदला। मैं राम और कृष्ण का सेवक था। हालात से सपने में दाता दयाल आ गए, उनके चरणों में मैं गया, उन्होंने बडी युक्ति से मेरे ख्यालात को बदल करके गुरु मत में ले आये। और अब जो गुरु मत मैं ने समझा है उस ने गुरु मत को भी छुड़ा दिया। वहां पहुँचता हूँ जहां न सतनाम है, न नाम है और न वहां अनामी है। ये है हमारी आखिरी मंज़िल।

असली लाभ तुम को तब होगा जब तुम देह और मन के रूप को समझोगे, जब तक शरीर है

तुम मन से तो बाहर निकल नहीं सकते, मगर इस के रूप को समझ जाना और इस में न फँसना सारा मतलब इतना है। हमारे मन के अन्दर तरह तरह के ख्याल उठते हैं। ऊटपटांग हम बातें करते हैं। किसी से दुशमनी, किसी से झगड़ा, किसी की प्रशंसा इन को छोड़ दो यही दया है गुरु की। जब तुम इन को छोड़ दोगे, तो दुनिया में फँसोगे कैसे, इन को छोडोगे तब मन से बाहर निकलोगे। बाबा सावन सिंह जी भी यही कहा करते थे (दस द्वारे लँघो ते आगे गुरु खलोता ए) यानी 5 कर्म इन्द्रियों और 5 ज्ञान इन्द्रियों में हमारा मन काम करता है इस लिये जब तक तुम इन दोनों के रूप को न समझ लोगे, और फँसने से नहीं बचोगे तब तक तुम शान्ति को प्राप्त नहीं कर सकते, मैं नहीं कर सका, बहुत अभ्यास किया, बहुत आरतियाँ उतारी, अन्त में जब देखा कि इस के बात समझ में नहीं आती तो गुरु ने मुझ पर दया की, मुझे ये काम दे दिया कि अनुभव हो जाये और सच्ची समझ आ जाये। इस वास्ते गुरु की दया साधकी सँगत दोनों हों, पुस्तकों में

भी यही लिखा हुआ है और आप लोगों की सेवा से मुझे मन और माया के रूप की समझ आई, गुरु तो मन के अन्दर से निकलता है वो प्रत्येक आदमी के मन के अन्दर रहता है। मैं ही दाता दयाल को इस समय में मालिक का अवतार माना था, लाभ मुझे ही पहुँचा। तो तुम बडे हुए या जिस को तुम पूजते हो वो बड़ा है, सोच लो। गो ऐसा कहने का नीयम नहीं है। ये कहना नहीं चाहिये, तुम बड़े हो, अपनी ईज्जत आप करना सीखो, तमाम दुनिया के लिये दीनता का अंग और है, खास खास जो समझदार आदमी हैं, उन को मैं कहता हूँ कि ये है सच्चाई। ये दया मैं गुरु के रूप में आप लोगों पर कर सकता हूं।

अवल निबल में शक्ति कहां है वो तो दीन दुखारी।
अपने वल तुम आन छुडावो जग जीवन हितकारी।

गुरु जो होता है, वो किसी खास पँथ का नहीं होता। वो तमाम का हितकारी होता है, जिस

जिस प्रकार एक मां सब बच्चों की होती है और सच्ची मां सब के साथ एक जैसा व्यवहार करती है।

त्राह त्राह कर चरण कमल हुए अचेत प्रभू आयो।
राधास्वामी चरण शरण बलिहारी जम का फन्द कटाओ।

ये देखो वो कहते हैं दुखी था, राधास्वामी की शरण में गया। क्या मिल गया ? जम का फन्द कट गया। जम क्या होता है ? ये सब उनका अपना मन है, जब तक किसी को ये ख्याल नहीं आता कि ये मन जो है, यही दुःख और सुख के देने वाला है, इस के रूप को नहीं समझा तो आदमी लाख कोशिश करे, गुरु बन जाये या कुछ भी बन जाये, राम को पूजे या किसी और को पूजे उसका इस संसार के दुःख सुख से बचना मुशकल है, और न ही वह आवागवन से बचेगा, इस बात का समझा देना ही गुरु की असली दया है, जिस से वह जीवों का भला कर सकता है। मैं बूढ़ा आदमी हूँ मुझ पर दया करो, आज का सत्संग इतना काफी है। मैं ने बहुत कुछ आपको कहा, मैं ने अपनी तरफ से कोई कसर समझाने में नहीं छोड़ी जो मैं

समझाता हूँ मैं बहुत ऊँचा बोलता हूँ, इस में कोई शक नहीं मगर मैं क्या करूं। जिस अवस्था में मैं हूं मैं वह बात कहूंगा अब मुझ से क-ख-ग तो पढ़ाया नहीं जाता क्या करुं ?

लड़का है! प्रोफेसर अगर चाहे छोटे लड़के को क-ख-ग सिखाये वो नहीं सिखा सकता, वो ट्यूशन रख देता है। लड़के को वो पढ़ा नहीं सकता, वो B-A या M-A को पढ़ायेगा, इसी प्रकार मेरी शिक्षा जो है ये केवल समझ वालों के लिये है न कि आम जनता के लिये, मैं ने गुरु की ड्यूटी पूरी कर दी जो मैं ने समझो।

नोट-: कामी के
है। बल्कि किसी चीज़ की प्रबल इच्छा में फँसना ही काम है और जो आदमी किसी न किसी प्रबल इच्छा में फँसा हुआ है वो पार नहीं जा सकता। स्वामी जी ने कहा है।

चमरया चाह बसे जिस के घट में गुरु कैसे धारें पाय।

जब ज्ञान हो जाता है तो परमार्थ की चाह नहीं रहती, मैं सचाई को जानना चाहता था, यदि चाह नहीं है तो जीवन नहीं है। जीवन नाम ही चाह का है,

मगर फंसना नहीं चाहिये, यही जीवन भुक्त अवस्था है। मानसिक भक्ति से खुशी मिलेगी, आनन्द मिलेगा शान्ति नहीं मिलती, खुशी शान्ति नहीं है। क्योंकि शान्ति तो खुशी में तबदील नहीं हो सकती शान्ति में इन्सान का मन चलायमान नहीं होता। सम अवस्था रहती है। गुरु ज्ञान ही हैं जो हर समय हर प्रकार की तकलीफों से आदमी को बचा सकता है।

सब

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर ।

दिनांक 30-3-80

सत्संग में कोई आदमी ऊंचे स्वर से रामायण की चौपाई गा रहा था, मैं ने सुनी, सोचता हूं कि इन्सानी नसल अनेक प्रकार के मज़हबों में बटी हुई है। मगर क्या ये सुखी हैं ? किसी भी मज़हब व पँथ के बड़े आदमियों को देखो, उन्होंने क्या तकलीफें नहीं उठाई। तो मैं बहुत सोचा कि इन्सान किस मज़हब या पँथ में शामिल हो, क्या करे कि दुःखों, और तकलीफों से बच सके। राम, कृष्ण, देवी देवता या किस को पूजे कि वह दुनिया में सुखी रहे ? कोई सूरत बचने की हो सकती है ? कोई तरीका है जिस से हम सदा के लिये दुःखों वे बच जायें ।

बचने की एक सूरत हो सकती है। तजुर्बा साबित करता है, कि हमारे साथ जो कुछ बीतती

भी करता है, नाम धारियों का भी करता है। इस से निकल जाओ, क्योंकि दुनीया में दुख सुख के महसूस करने वाला तुम्हारा या हमारा मन है। हमारा मन जो है ये हम से कर्म कराता है, अच्छे या बुरे, जब हम मन को छोड़ जायेंगे मन से ऊपर चले जायेगें, या कुछ ख्याल नहीं करोगे, उस अवस्था का नाम हिन्दुओं में निर्विकल्प समाधि है और सन्तों में उसे महासुन्न कहते हैं। जब तक इन्सान इस मन में है। कोई भी हो, वो कुछ न कुछ सोचने के लिये मजबूर है। अगर उस को ये समझ आ जावे कि ये सारा मन का खेल है और फिर ये समझ कर जो ख्यालात उस के अन्दर से पैदा होते हैं वो बाहर के प्रभाव की वजह से हैं, उस में वो रुची न ले, उसके साथ अपने आप को न लगाये, अपना ना समझे, तो वो मन से पार हो जायेगा और अगर कोई दुख मुसीबत आवेगी भी तो जब मन उस को मानेगा ही नहीं, सत ही नहीं मानेगा, माया ही मानेगा, तो वो इस तकलीफ़ से बच सकता है।

ये है सन्तों का मार्ग। दुनिया ने सन्तों का मार्ग ये समझा हुआ है कि सन्त पुत्र देते हैं, बीमारी

नहीं होने देते, वे कर देते हैं वो कर देते हैं, ये सब दुनिया में धोखा है और कपट है जो कुछ तुम ने या मैं ने या किसी ने पिछले जन्म में या इस जन्म में किया हुआ है वह भोगना पड़ेगा। जब तक कोई आदमी शरीर और मन से निकलता नहीं उसका बचाव होना असम्भव है। जब तक जीवन है, तुम शरीर और मन से बाहर कहां जाओगे ? केवल रूप को समझना है, और उस में फँसना नहीं।

अर्थात् मन के रूप को समझ कर अपने आप को चक्कर से ऊँचा रखो या अपने आप को मन और शरीर न समझो ताकि मन के चक्कर में आकर रोना पीटना समाप्त हो जाये। केवल यही एक तरीका है, जो हम को इस संसार के दुखों से सदा के लिये बचा सकता है, और कोई तरीका नहीं। ये यकीन होना चाहिये कि जो कुछ मन सोचता है; वो सत नहीं माया है। इसी वास्ते हमारे ऋषियों ने सर्व साधारण के लिये शिक्षा दी है, शिवसँकल्पम्-अस्तु इस का मतलब ये है, कि हमेशा अच्छा ख्याल और अच्छा विचार रखो, क्योंकि ख्याल में ताकत है। जो कुछ तुम ख्याल करते हो, उस के

असर से तुम बच नहीं सकते। इस लिये जो मैं ने समझा बताता हूँ, मैं कोशिश ये करता हूँ और सब को यही कह सकता हूँ कि अपनी नीयत को साफ रखो, अपनी ज़ाती ग़रज के लिये किसी के साथ धोखा फरेब चार सौ बीस, हेरा फेरी मत करो, क्योंकि ख्याल की दुनिया है। ख्याल में शक्ति है। तुम्हारे कर्म अच्छे बनें और तुम उन कर्मों की सजा न भुगत सको, नेकी करो, दुनिया की सहायता करो नेक बनो। मेरी समझ में दुनियादारों के लिये ये ही आया है कि नेक बनो। अगर वो नेक नहीं बनते तो कसूर उन का अपना है। तुम बुरा मानो या भला मानों मैं सच्ची बात कहने से नहीं टलता क्योंकि नीयत, जिस ख्याल से और भाव से हम स्त्री पुरुष मिलते हैं, उन के ख्यालात और भाव का असर आने वाले बच्चे पर पड़ता है। जैसा तुम्हारा विचार मिलते समय होगा, वैसा बच्चा होगा या जो विचार व इच्छाएं माता रखती है, जब बच्चा पेट में होगा वैसा बनेगा। इस लिये अच्छी सन्तान पैदा करो, ये तुम तभी कर सकते हो, जब आप अच्छे होंगे, बाप स्वयं शराब पीता है, बदमाशी करता है, फिर ये आशा

रखे कि उस का लड़का नेक हो जाये ये नहीं हो सकता, हां कभी विशेष बात हो सकती है। तो मैं ये कहना चाहता हूं, कि इस मन के चक्कर से निकलो, और यही सन्तों ने कहा है, अगर हमेशा के लिये बचना चाहते हो, तो मन के जितने विचार हैं इन को माया समझो है नहीं, केवल कल्पना है। और अपने अन्दर शब्द और प्रकाश को पकड़ो।

यही सनातन धर्म कहता है, गायत्री मन्त्र के यही अर्थ हैं लोगों ने तो केवल माला पकड़ कर गायत्री मन्त्र का एक लाख जाप कर दिया, ये तो अमल करने की चीज़ थी, कि जाग्रत स्वप्न, शुषुप्ति के परे जो सावित्री है अर्थात सूरज है, उस के दर्शन करो वो तुम्हारी बुद्धि का प्रेरक होगा। करना तो ये है कि अपने अन्दर प्रकाश को पैदा करना है। ये तो हम करते नहीं, मन्त्र ही ज़बान से रटते रहते हैं। मन्त्र चूंकि रटे जाते हैं, जबान चलती रहती है, दिल कहीं रहता है मन कहीं जाता है। सनातन में और सन्त मत में कोई अन्तर नहीं, हां, ऊँची शिक्षा इन्होंने आम जन्ता को नहीं दी, अगर दी तो योग वशिष्ठ में दी।

उन्हों ने सब चीजों को माया ही समझ लिया, ये ऊँची बात है। यही सच्चा गुरु मत है। हम, जो हमारा रूप है, जो असली फ़कीर चन्द है, असली तुम हो, वो उस मालिक परम तत्व आधार की अँश है। हम इस मन के चक्कर में फंसे हुये हैं। रूप का सच्चा यकीन तब होता है जब कोई मन को छोड़ कर अपने रूप में चला जाता है। मन से परे है ाश और पार ब्रह्म जब इस में गुम हो जाता हूं। उसका नाम है अनामी, इसी जीवन में मन को छोड़ कर निर्बन्ध हो जाओ, तब ही तुम ठहर सकते हो अपने रूप में, नहीं तो मन में फँसे रहने से मन भारा होगा, और ज़मीन की कशश खेंचेगी, जिस से बार बार जन्म लेने के के लिये मजबूरी होगी।

हिन्दू शास्त्र कहते हैं। ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं, दुनिया ने ज्ञान को ये समझा हुआ है, कि अंह ब्रह्म हूँ, मैं सत हूँ, मेरा ये अनुभव नहीं है। मैं सोचता हूँ, कि मैं हूं कौन? मैं एक चेतन का बुलबुला हूँ। हरकत से शब्द और प्रकाश प्रगट हुआ उस में जो चेतना आई वो मैं हूं। सुरत

प्रगट हुई है। और अगर मैं शरीर और मन को छोड़ जाऊँ तो जहां मैं पहले था, वहां चला जाऊँगा, पहले कहां था। स्वामी जी ने कहा है।

सुन री सुरत तू अपना भेद।
तू मुझ में थी सदा अभेद।

अर्थात सुरत जो थी मालिके कुल में, परम तत्व में अभेद थी, जिस प्रकार पानी का कतरा समुद्र में डाल दो, उस में अभेद हो गया, अपनी हस्ती खो गया। ऐसे ही जब तक कोई आदमी मरने से पहले अपने आप को हर प्रकार की अटैचमेंन्ट से निर्बन्ध नहीं करता, तब तक वहां वह नहीं पहूँचेगा। अगर उस का प्रेम प्रकाश या शब्द से है, तो वह ब्रह्म हो जायेगा। मगर उस को [illegible] नहीं मिलेगी, मैं ने यह समझा है।

नहीं, दुनिया ने ज्ञान को ये समझा हुआ है, कि अंह ब्रह्म हूँ, मैं सत हूँ, मेरा ये अनुभव नहीं है। मैं सोचता हूँ, कि मैं हूं कौन? मैं एक चेतन का बुलबुला हूँ। हरकत से शब्द और प्रकाश प्रगट हुआ उस में जो चेतना आई वो मैं हूं। सुरत

अलग शब्दों में और अलग अलग वर्णन शैली में वर्णन करके मैं अपनी ड्यूटी पूरी करता हूँ। मैं इस सन्त मत को न समझने के कारण बहुत दुखी रहता था कि सन्तों ने ब्रह्म को भी आखिरी

मंजल नहीं बताया। ब्रह्म क्या है ? ब्रह के अर्थ बढ़ना और मनन के अर्थ सोचना। यह सारा संसार ब्रह्म है। मगर वो ब्रह्म है क्या ? वो है रोशनी प्रकाश, सावित्री और अग्नि का गुण है। जिस तरह से ग्रासमैटर की दुनिया में गिरेवेटी आफ अर्थ है। इस में खेंचने की ताक्त है। इसी प्रकार जो ब्रह्म यानी प्रकाश के मण्डल में चला जाता है और प्रकाश से ही प्रेम करता है। प्रकाश भी देह है, प्रकाश अर्थात् शूक्ष्म प्रकृति की गिरेवेटी उस को ऊपर नहीं जाने देगी, प्रकाश का घ्यान करने वाला भी स्थाई मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकता, प्रकाश एक रास्ता है, आखिरी मन्जिल नहीं, इस लिये सन्तों ने दुनिया से हमेशा के लिये पार होने के लिये सुरत शब्द योग रखा है। शब्द आकाश का गुण है। इस लिये असल चीज जिस को हम अपना इष्ट बनावें, वह गुरु में बाहर वाला गुरु होता है। उसके सत्संग से असली गुरु अर्थात अपने आप का पता लगता है, और वो असली गुरु है शब्द, इस वास्ते कवीर साहेब कहते हैं।

शब्द गुरु को कीजिये बहुते गुरु लवार।
अपने अपने स्वाद को ठौर ठौर बट मार।

यही बात गरुड़ पुरान में लिखी हुई है । जिस अनुवाद मैंने गरुड़ पुराण रहस्य नामी पुस्तक में किया हुआ है अगर कोई आदमी अवागवन के चक्कर से बचना चहता है, तो जब तक गायत्री मन्त्र का अजप्पा जाप व गुरु मूरत का ध्यान करते हुए पार ब्रह्म और शब्द ब्रह्म के देश से परे नहीं जाऐगा उसका आवागवन समाप्त नहीं होगा । गरुड़ पुरान के आखिरी पेज पर ये लिखा है । इस लिये मैं समझता हूं, सन्त मत और सनातन धर्म में कोई अन्तर नहीं है-बाकी जितने मज़हब व पँथ हैं, ये सब सनातन धर्म से निकले और ये इसी की शाखायें हैं । कोई ये न समझे की मैं ब्राह्मण होने के नाते हिन्दु धर्म का पक्ष कर रहा हूँ बल्कि आद सनतान यही है । मुझे तो इस आयु में आ कर सन्त मत की हकीकत का पता लगा है, मेरा ये संत्संग वो है जिसे कहते हैं, 100 साल की भक्ति से $1\frac{1}{2}$ घड़ी का सत्सँग बहुत अच्छा है ।

राधास्वामी

सत्संग हजूर परमदयाल जी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर ।

दिनांक 2-11-1980

• यह माया रघुनाथ की बोरी ।
खेलन चली, अहेरा हो
चतुर चिकनियां चुनिचुनि मारे ।
काहु न राख्यो-यारा हो ॥
मौनी वीर दिगम्बर मारे ।
ध्यान धरन्ते योगी हो ॥
जंगल मे के जंगम मारे ।
माया किनहूं न भोगी हो ॥
वेद पढ़न्ते पांड़े मारे ।
पूजा करते स्वामी हो ॥
अर्थ विचारत पण्डित मारे ।
बान्ध्यो सकल लगामी हो ॥
शृङ्गी ऋषि बन भीतर मारे ।
ब्रह्मा के शिर घोरी हो ॥
नाथ मछन्दर चले पीठी दे ।
सिहल हूं में बोरी हो ॥
सांकठ के घर कर्ता धर्ता ।
हरि भक्तन की चोरी हो ॥

कहहिं कबीर सुन हो सन्तो।
ज्यों आवे त्यों फेरी हो॥

मैं ने यह शब्द सुना। मैं यह काम करता हूं। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि क्या तुम मांया से अलग हो गये ? यह एक प्रश्न है जो शब्द को सुनने के बाद मेरे अपने अन्दर में अपनी तसल्ली के लिए सवाल पैदा हुआ। कबीर ने सब का खन्डन किया है और सब को माया में रखा है। कबीर साहिब का क्या भाव था वह जानते होंगे। मैं इन बाणियों को पढ़ पढ़ कर जीवन में पागल हो गया। अब यह कहने के लिये विवश हूं।

जो कुछ कबीर साहिब ने कहा है वह ठीक है। मुझे तो इसके ठीक होने का विश्वास है। मगर दूसरों को विश्वास दिलाना कठिन है मैं विश्वास नहीं दिला सकता क्योंकि दूसरा वहीं समझ सकता है जिस को इसके समझने की इच्छा हो।

मैं कैसे समझा ? जब यह विचार पैदा हुआ कि मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रकट होता है उनके काम कर जाता है लेकिन मैं नहीं होता और न ही मुझे

पता होता है। इसी प्रकार सब संसारी जीवों की जो यह सहायता होती है चाहे वह मुहम्मद के रूप द्वारा हो, चाहे वह कृष्ण के रूप द्वारा हो या इसामसीह, बुद्ध या किसी गुरु के रूप में हो वह क्या है? वह मानव के अपने ही मन की माया है। मैं ने ऐसा समझा है, पता नहीं मेरी समझ ठीक है या ग़लत है। सारे धर्म सारे पंथ हर एक विचार वाले, सब के सब अपने ही मन के विचारों के चक्कर में आकर अपनी सहायता करने वाले को दूसरा समझते हैं। इस लिये शायद कबीर साहिब ने यह शब्द सन्तों को सम्बोधन किया है। वो संत बनकर काम करता है और अपने आप को सन्त महन्त, गद्दीपती या किसी संस्था का संचालिक समझता है, मेरे समेत क्योंकि मैंने मानवता मन्दिर बनाया है, हम सब माया में हैं अर्थात हमारी अपनी बुद्धि, विचार और अनुभव ने किसी को माना है, कोई नई चीज़ पैदा की है, पंथ बनाये है, किसी ने धर्म बनाये हैं, और किसी ने वेद पुरान बनाये हैं। इससे क्या सिद्ध हुआ। इससे यह सिद्ध हुआ कि हर एक मानव को अपनी ही माया और बुद्धि का खेल है।

अब मैं अपने आप से पूछता हूं कि फकीर चन्द! तुम समझ तो गये कि यह सब माया है लेकिन तू बता कि अगर वह सब कुछ ही माया है तो तू क्या है ? अगर तू कबीर साहिब के साथ सहमत हो गया है तो तू बता कि तू कौन है ? जिस प्रकार कबीर साहिब ने कहा है सन्त अपने आपको अलख अगम और अनाम से आये हुये बताते हैं। जिस प्रकार कबीर साहिब ने कहा है :—

हम वासी उस देश के जहां बारह मास विलास।

अगर कबीर साहिब होते तो मैं उनको पूछता कि अगर आप उस देश के वासी हैं जहां सदा विलास पैदा होता है क्या वह माया नहीं है ? मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा, किसी बात का दावा नहीं करता। मुझे यह समझ आई है कि मैं हूं ही नहीं। प्रकृति के मिल जाने से गति से शब्द और प्रकाश पैदा होता है जिस प्रकार सोडा या टाटरी के मिल जाने से शू शू होती है। उस शब्द और प्रकाश के पैदा होने से जो कि गति से पैदा होता है एक चेतनता पैदा होती है और उस चेतनता को शायद संतलोग सुरत कहते हैं। ज्यों २ नीचे रचना होती रहती

है। मानव ने हरेक रचना के नाम अगग-२ रखे हुये हैं। प्रकाश की चेतनता का नाम आत्मा, मन की चेतनता का नाम मन, बुद्ध, चित्त, अंहकार और शरीर में आकर उस चेतनता का नाम जीवपना या जीवन है। यह खेल चेतनता का बनना और जीवन तक आना और टूटना और फिर समाप्त हो जाना है। समझ में आता है कि यह प्रकृति का एक स्वाभाविक नियम है। क्योंकि मानव में उसका मैं पना, मोजूद रहता है, शरीर में शारीरिक मैं पना कि मैं बाप, बेटा, ब्राह्मण या मुसलमान हूं आदि 2। अगर ज्ञान की दृष्टि से यह मैं मिट गई, जिसकी समझ मन की वृत्तियों को इकट्ठा करने के बाद हुई तो वह मन की मैं,, में फंस गया, मैं परोपकार करुं वह करुं, यह करुं, यह वहां समाप्त हो जाता है। आगे प्रकाश को 'मैं, ने समझ लिया कि मैं प्रकाश स्वरूप हूं, मैं ब्रह्म हूं ऐसे ही सुरत, आद चेतनता,जब आद शब्द को सुनती है तो अपने आप को सब कुछ समझ लेती है, परम संत बन जाती है और लोगों को फकीर चन्द बनकर उपदेश करती फिरती है। यह भी मैं पना है। इससे आगे क्या है ? जब कभी

चारों "मैं पने" समाप्त हो जाते हैं तो न "मैं" न "तू"। क्या हो जाता है ? अगर कुछ होता तो वह वर्णन करता। सन्तों ने केवल संकेत किया है।

नहिं खालिक मरवलूक न खिलकत

ऐसे ऐसे शब्द लिखे। कबीर साहिब ने भी कह दिया।

जहं पुरष तहवाँ कछु नांहि, कहै कबीर हम जाना।
जो कोई हमरी सैना समझे, पावै पद निर्वाना।

खेद है कि कोई सन्त मेरे सामने नहीं आता जो अपनी रहनी को बताए। मैंने क्योंकि प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा, दाता ने कहा था कि शिक्षा को बदल जाना। इस लिए कहता हूँ कि सारे, धर्म, पंथ, गुरु, चेले या हर प्रकार के विश्वास रखने वाले माया के चक्कर से बाहर नहीं हुये। मैं जानता हूँ मगर अभी तक बाहर नहीं हो सका। उस दिन की प्रतीक्षा करता हूं जब यह सारा स्पप्न का खेल समाप्त हो जायेगा। न फिर मेरे लिए मैं रहेगी, न खुदा

रहेगा, न गुरु रहेगा, न राम रहेगा और न कृष्ण रहेगा दूसरो के लिए नहीं।

इस शब्द को सुना था, अपनी रहनी को सामने रखकर मौज अधीन जो प्रकृति ने समझाया वह कह दिया। पता नहीं बुढ़ापे के कारण मेरा मस्तिष्क खराब हो गया है। जिन्दगी अब बे जिन्दगी होना चाहती है। हस्ती बेहस्ती होना चाहती है। अपना आप अपने आपे को भूल जाना चाहता है। ऐसी इच्छा क्यों पैदा होती है पता नहीं लगता। बेबसी है। इस लिए इतने जीवन के अनुभव के बाद मैं केवल शरणागत हो गया। किसी बात का कोई दावा नहीं कि जो कुछ मैं करता हूं ये अवश्य ही ठीक है। मेरा कर्म भोग है, काम रहता हूं। अब संसार अच्छा नहीं लगता यह संसार तमाशा या सपना लगता है।

सब को राधास्वामी

राधास्वामी

शब्द वो प्रकाश

लेखक-कुबेर नाथ श्री वास्तव

आज जी में आता है कि मैं तुम को शब्द वो प्रकाश की महानता बताकर शब्द योग की ओर आकर्षित करुं। ताकि तुम शब्द व प्रकाश रूपी सद् गुरु की आराधना करो जिससे प्रसन्न हो कर वह तुम्हारी रक्षा हर प्रकार से किया करें। शब्द व प्रकाश रूपी सद् गुरु सदैव तुम्हारे अंग संग व्यापक है। मगर उनका ज्ञान न होने के कारण तुम काल व माया के झकोले खाकर इधर-उधर मारे-मारे फिरते हो।

जैसे सूरज से गरमी, चांद से सरदी और श्रोत से पानी स्वत: निकला करता है वैसे ही शब्द से प्रकाश स्वत: निकलता रहता है। शब्द का गुण प्रकाश है, प्रकाश शब्द का प्रतिबिम्ब व अक्स है जिसके द्वारा वह इस सृष्टि की रचना करता है। शब्द की विस्तृत रूप में शब्द व प्रकाश कहते हैं। शब्द को महानता ज्यों की त्यों वर्णन नहीं की जा सकती। वह स्वयं महानता का रुप है। कहने सुनने के हेतु कुछ कह रहा हूं।

शब्द तीन प्रकार का होता है जिसका नाम कारण, सूक्ष्म व स्थूल है। कारण शब्द से सूक्ष्म

शब्द प्रगट होता है। सूक्ष्म शब्द से स्थूल शब्द प्रगट होता है। जैसे भाप से पानी बनता है, पानी से बर्फ बनता है। भाप कारण, पानी सूक्ष्म और बर्फ स्थूल शब्द हैं। जिन लोगों को कारण शब्द का अनुभव हो गया है वे भली भांति जानते हैं कि कारण से सूक्ष्म और सूक्ष्म से स्थूल शब्द किस प्रकार प्रगट होता है। जो वस्तु जितनी ही सूक्ष्म होगी बस उतनी ही विस्तृत, विशाल व शक्ति शाली होगी। स्थूल से सूक्ष्म विस्तृत, विशाल और शक्तिशाली है। सूक्ष्म से कारण विस्तृत व, विशाल और शक्तिशाली है और कारण से अधिक विस्तृत विशाल व शक्तिशाली महा कारण है। जो पढ़ने लिखने, कहने-सुनने में नहीं आता। जब तुम कारण अवस्था प्राप्त कर लोगे तब स्वयं महाकारण का अनुभव कर लोगे।

जब दो वस्तुएं आपस में टकराती हैं तो शब्द व प्रकाश प्रकट हो कर रचना का कार्य करने लगते हैं और कोई वस्तु दिखाई, सुनाई मालूम पड़ती है अकेली वस्तु न टकरा सकती हैं और न शब्द व प्रकाश प्रगट कर सकती है।

तुम सब काम-काज शब्द व प्रकाश द्वारा करते हो, मगर तुम्हारा ध्यान इस बात की ओर कभी आकर्षित नहीं हुआ। क्योंकि तुममें इसके समझने की छमता नहीं है। तुम नींद में सो रहे हो। तुम्हारा स्वयं अकेला पन है वह कुछ सोच समझ नहीं सकता। विचार की धार तुम्हारे स्वयं से टकरायी शब्द व प्रकाश प्रगट हुआ तुम जाग उठे और काम काज करने लगे। स्थूल सूक्ष्म व कारण सृष्टि का रचना करने वाला शब्द व प्रकाश ही है इसको ब्रह्म कहते हैं वह तुममें अंश रूप में व्यापक है जिसके कारण तुम सुख दुःख का ध्यान करते हो, शब्द व प्रकाश के साधन से तुम्हारा अंश ब्रम्ह पूर्ण ब्रम्ह से मिल जायेगा और तुम सर्वव्यापक हो कर सुख दुःख से परे की अवस्था में चले जाओगे जहां इनका प्रभाव नहीं है। ज्यों ज्यों सूक्ष्म शब्द अपने मंडल से नीचे आता है त्यों-त्यों स्थूल रूप धारण करने वाला है और ज्यों, ज्यों ऊपर जाता है वह सूक्ष्म व अति सूक्ष्म होते हुए लुप्त हो जाता है। रचना समाप्त हो जाती है प्रलय और महाप्रलय हो जाती है।

वह लोग बड़े भाग्यशाली हैं जो शब्द का

साधन करते हैं, वह लोग धन्य हैं जिन्होंनें अपने अन्तर में शब्द व प्रकाश प्रगट कर लिया है और उन लोगों की महिमा कही नहीं जा सकती जो उपरोक्त लोगों की निरख-परख व देख भाल करते हैं।

हीरा परखे जोहरी, शब्द ही परखे साधु।
कंबीर जी परखे साध की ताका मता अगाध॥

शब्द योग से काम, क्रोध, लोभ मोह व अहंकार सम अवस्था में आ जाते हैं और अपनी सीमा में रहते हुए लाभदायक कार्य करते हैं तथा बजाय तुम्हारे शत्रु बनकर तुम्हारी हानि करने के तुम्हारा मित्र बनकर यथा उचित लाभ पहुंचाने लगते हैं। वासना जो अध्यात्मिक रोग है सूक्ष्म बनकर मन के अधीन हो जाती है। मन वासना से रहित हो जाता है। बुद्धि सूक्ष्म हो जाती है जो काम कोई घंटों में नहीं कर पाता उसको शब्द अभ्यासी मिनटों में कर लेता है। धीरे-धीरे विवेक की शक्ति आ जाती है। शरीर के रक्त का संचालन सम अवस्था में रहता है जिसके कारण तुम प्रसन्नता, आनन्द व शान्ति के अधिकारी बन जाते हो। चित निर्मल व प्रफुल्लित रहता है।

क्योंकि सद् गुरु शब्द तुम्हारा रक्षक बन जाता है बुद्धि तीव्र व इच्छा शक्ति प्रबल हो जाती है आयु बढ़ जाती है। शब्द योग प्राकृतिक योग होने के कारण बहुत सरल व स्वाभाविक है। स्त्री, पुरुष, युवा व लड़का सुगमता पूर्वक कर लेता है। जैसे पहले-पहल किसी पाठशाला में भर्ती होने पर तुमको अक्षरों के पढ़ने लिखने में थोड़ी कठिनाई प्रतीत होती है वैसे ही शब्द योग में पहले-पहल थोड़ी कठिनाई प्रतीत होती है। फिर तो जब तुम को इसका रस मिलने लगेगा तब तुमको अगर कोई लाख कहे कि तुम इसको छोड़ दो तो तुम छोड़ नहीं सकते। संयोगवश अगर तुम ने इसको छोड़ना भी चाहा तो वह तुमको उस समय तक नहीं छोड़ सकता जब तक तुमको आदर्श की प्राप्ति न करा देगा। शब्द का साधक किसी भयंकर रोग में ग्रसित नहीं होता। और किंचित हो भी गया तो उस से शीघ्र ही छुटकारा पा जाता है यद्यपि वह स्वतः समाप्त हो जाता है परन्तु सम्पन्नता के आडम्बर में नहीं फंसता। दूसरों की प्रसन्नता उसकी प्रसन्नता का कारण बन जाती है। शब्द ही तुम्हारा मित्र व सच्चा सहायक है। अगर तुम

शब्द में प्रवेश कर गये तो गुरु व शिष्य दोनों मिलकर एक हो जायोगे। शब्द ही धरती, अकाश व पताल है। शब्द ही ने सात द्वीप और नव खण्ड प्रगट किया है। शब्द ही स्वर्ग और शब्द ही नर्क है।

तुम काल व माया के प्रभाव से बचने के लिऐ शब्द योग करके शब्द व प्रकाश का गढ़ बनाओ ताकि तुम पर जब काल व माया प्रवाभित हों तो तुम इस गढ़ में अपने को सुरक्षित कर सको। तुम शब्द के हवाई जहाज पर सवार हो जाओ और माया और काल के समुद्र के प्रभाव से वचते हुए लक्ष पर पहुंच जाओ। काल व माया जिसके प्रभाव से तुम दुख को भान करते हो वह दुख, सुख के रूप में परिवर्तित हो जावेगा और तुम काल व माया का हर्ष पूर्वक स्वागत करोगे।

तुम्हारा शरीर स्वयं शब्द स्वरूप है उससे प्रकाश की धार बिजली के रूप में तुम्हारे रोम-रोम से निकल कर तुम से काम काज करा रही है। जैसे तुम्हारे विचार भले या बुरे हैं वैसे ही

शब्द व प्रकाश प्रकट हो कर तुमसे भला या बुरा कार्य करवाता रहता है और तुम को सुख या दुःख होता रहता है। अगर शब्द योग साध कर तुमने अपने अन्तर में शब्द व प्रकाश प्रगट कर लिया तो दीन व दुनिया में सुफल रहोगे।

तुम में प्रत्येक प्रकार की विद्या व कला के गुणा वैसे ही छिपे हुये हैं जैसे सोना खान में छिपा रहता है। मगर जब तक परिश्रम करके खान को खोदकर सोने को नहीं निकालोगे तब तक खान का सोना तुम्हारी सहायता नहीं कर सकता इसी प्रकार जब तक परिश्रम करके शब्द व प्रकाश को अपने अन्तर में प्रगट नहीं कर लोगे तब तक तुम को कोई लाभ नहीं पहुंचा सकता। दाता दयाल कहते हैं—

सैन बैन का आसरा सतसंग द्वारा दान दें।
शब्द योग सिखाय अनहद धाम पद निरवान दें।

इसका अभिप्राय यह है कि तुम किसी पूर्ण पुरुष के सत्संग में जाओ वहा तुमको उनके सैन

बैन द्वारा अपने अन्तर के शब्द व प्रकाश का ज्ञान होगा। वह तुम को शब्द योग सिखायेगें जिस से तुम निर्वाण को प्राप्ति कर लोगे फिर कहते हैं।

खुदा के पास होने का यकीन मुश्किल से होता ।
वगर्ना गर खुदा ही पास है तो बे कसी कैसी ॥

अर्थात ईश्वर के अपने अंग संग होने का विश्वास तुम को मुश्किल से हो जावेगा यानी तुम को शब्द व प्रकाश रूपी ईश्वर अपने अन्तर में प्रगट करने में थोड़ी कठिनाई पड़ेगी मगर जब तुम अपने अन्तर में शब्द प्रकाश प्रगट कर लोगे तो तुम हर प्रकार से सम्पन्न हो जाओगे और तुमको कोई चिन्ता नहीं व्यापेगी। शब्द योग द्वारा ज्यों-ज्यों तुम इसमें प्रवेश करते जाओगे, त्यों-त्यों तुम्हारी वासनायें सूक्ष्म होती चली जायेंगी और वासना की लपट कम होती जायेगी। धीरे-धीरे तुम वासना की लपट से बिल्कुल मुक्त हो जायोगे। देहधारी गुरु की दया से स्थूल बन्धन कटते हैं। वह शब्द व प्रकाश का योग सिखाता है और तुम्हारे

अन्तर में अपनी दया से शब्द व प्रकाश प्रगट करा देता है। जिसको सद् गुरु कहते है। सद् गुरु की दया से सूक्ष्म बन्धन कट जाते हैं। शब्द योग से तुम को अपने "स्वयं" व "निज स्वयं" का अनुभव हो जावेगा। और यह पता चल जायेगा। कि इस सृष्टि की उत्पत्ति व प्रलय तुमहारे "स्वयं" पर ही आधारित है। और यह सृष्टि तुम को स्वप्न तुल्य व्यापेगी इस ज्ञान से तुम संसार से उदासीन हो जाओगे। तुम अपना कार्य नाटक के खिलाड़ी की भांति इस संसार में वर्तोगे। तुम को अपने कार्य के लाभ से न प्रसन्नता होगी न हानि से दुख व्यापेगा। सबसे बड़ी बात शब्द योग से यह होगी कि तुम को ईश्वर की इच्छा पर निर्भर रहने का रहस्य प्राप्त हो जायेगा और तुम मालिक की मौज पर रहोगे। हमारी बात को तुम ज्यों का त्यों उस समय समझोगे जब तुम में शब्द व प्रकाश प्रकट हो जावेगा।

स्मरण रहे कि "शब्द ब्रह्म या ईश्वर का मस्तक है तथा "प्रकाश" उसका चरण है। संत

तुलसी दास कहते हैं—

सुशी मीन जहां नीर आगाधा।
जिमी हरि चरण न एको बाधा।।

इसका अभिप्राय है कि अगर तुमने प्रकाश (जो ईश्वर का चरण) को अपने अन्तर प्रगट कर लिया तो तुम्हारी सांसारिक, मानसिक व आत्मिक सभी कामनायें पूरी हो जायेंगी।

समुद्र में सब से अधिक स्थूल शब्द होता है जिस से प्रकाश रूप में उस में ज्वार व भाटा आता है उसकी लहरें अकाश छूने लगती हैं। इस कारण समुद्र में सब से अधिक जीव जन्तु उत्पन्न होते हैं। समुद्र से कम शब्द पृथ्वी पर होता है इस कारण पृथ्वी पर समुद्र से छोटे व कम जीव जन्तु उत्पन्न होते हैं। पृथ्वी से कम शब्द पहाड़ पर होता है इस कारण पहाड़ पर पृथ्वी से छोड़े व कम जीव जन्तु उत्पन्न होते हैं।

तुमको रहने सहने खाने-पकाने के हेतु कोई स्थान नहीं है इसका दुःख तुमको व्यापा इस का कारण

शब्द है, इस से सूक्ष्म शब्द प्रगट हुआ है तुमको मकान बनाने का ध्यान आया धीरे-धीरे सूक्ष्म शब्द ने स्थूल रूप धारण कर लिया । तुमने अपने अन्तर में मकान का रूप प्रगट कर लिया उस का ध्यान तुम को होता रहा । तुमने धन एकत्रित किया, भूमि मोल ली, ईंटें, कारीगर व मजदूर की सहायता ली और मकान को स्थूल रूप में प्रगट कर दिया । तुम समझ गये कैसे कारण से सूक्ष्म और सूक्ष्म से स्थूल प्रगट होता है ।

तुम ने स्वयं मकान बनाया मगर उसको अपने से भिन्न समझ कर द्वन्द के बंधन मैं बंध गये और स्थूल के बन्दी बन गये । बात तब थी जब तुम स्थूल शरीर द्वारा मकान में रहते, सूक्ष्म मण्डलों में रहते, व कारण शब्द द्वारा कारण मण्डलों में रहते और तीनों मण्डल में रहते हुये, सच चित व आनन्द का अनुभव करते हुये (सच्चिदानन्द) हो कर तीनों को भूल जाते । किन्तु तुम ने कारण व सूक्ष्म को छोड़ दिया और स्थूल में फंस गये वह ऐसा क्यों हुआ ? क्योंकि तुम ने शब्द योग नहीं सीखा पहले शब्द योग

द्वारा अपने अन्तर में सूक्ष्म शब्द प्रगट करो। जो स्थूल व कारण दोनों पर नियन्त्रण करता है इस के बाद स्थूल व सूक्ष्म व कारण तिनों को छोड़ कर महा कारण में चले जाओ। तुम मकान के बनने बिगड़ने में सुख-दुःख का भान करने लगे यही दशा तुम्हारे धन, धाम, मान, बड़ाई, स्त्री व सन्तान के मोह में फंस कर हुई। तुमने रेशम के कीड़े की भाँती अपनी जान दे दी। तुम्हारी दशा उस मच्छली की हो गई जो द्वन्द रूपी समुद्र के खारे पान में जन्म लेती है और उसी में अपना पालन-पोषण करती है। अगर कोई उस को लाख समझावे कि तुम खारे पानी में रहती हो नदी का पानी मीठा होता है। नदी में चलो और मिठे पानी का आनन्द लोगो तो उसे मानना तो दूर की बात है वह उसको सुनना भी पसन्द नहीं करेगी। अगर वह किसी सत्त पुरुष के सम्पर्क में आ गयी और उसके बचनों पर विश्बास कर लिया तथा समुद्र से जाने का और नदी में रहने का कष्ट सहने पर तैयार हो गई तो वह सत्य पुरुष उसको समुद्र से निकालकर नदी में छोड़ देगा और मछली को मीठे पानी का स्वाद मिलने लगेगा। मछली

कहेगी कि उस सत्य पुरुष ने दया की अगर ईश्वर की दया से मछली समुद्र के उस भाग में चली जावे जहां नदी समुद्र में मिलती है और सौभाग्य वश उसको नदी के मीठे पानी का स्वाद मिल गया तो वह समुद्र को त्याग कर नदी में चली जायेगी।

तुमने लोगों को यह कहते सुन लिया और किताबों में पढ़ लिया कि काम, क्रोध लोभ, मोह तथा हंकार को मारो। उनके काम के मारने के अभिप्राय से तुमने स्त्री से द्वेष करके उसको त्याग दिया और जंगल में चले गये अपने चारों ओर धूनी जलाई और शरीर का रक्त सुखाकर काम अंग को निकम्मा कर दिया। क्रोध को मारने हेतु तुम सबको हाथ जोड़ते फिरते हो, लोभ को मारने हेतु तुमने काम काज करना छोड़ दिया, और मोह को मार ने के हेतु तुमने सब त्याग दिया और अहंकार को मारने हेतु तुम गुदरी पहनने लगे क्या इन सब कामों से तुम्हारा काम क्रोध लोभ मोह और अहंकार मर गया और तुम इससे मुक्त हो गये? यह तो तुम्हारे अन्तर में सूक्ष्म रूप धारण करके और भी बलवान हो गये इन पांचों के मारने का यह अभिप्राय नहीं है कि तुम इनका

विनाश कर दो इसका अभिप्राय यह है कि इनको वश में रखो। जब तुम घोड़े पर सवार होते हो तो उसको अपने वश में रखने के लिए उसके मुंह में लगाम लगाते हो और चाबुक से मारते हो, तुम हल जोतते हो बैल सीधा नहीं चलता उसकी चाल सीधी करने के हेतु उसकी डांट डपट करते हो। घोड़े और बैल को अगर मारकर विनाश करदोगे तो तुम किसपर सवार होंगे और तुम्हारा हल कौन जोतेगा। यह तुम्हारे अस्त्र तथा गुण हैं अगर तुम अस्त्र नहीं रखोगे तो अपने शत्रु से लड़ाई कैसे करोगे। अगर तुम गुणवान नहीं हो तो कमाकर अपना पेट कैसे पालोगे। इन पांचों के मारने का अभिप्राय इनको वश में रखना है ताकि वह अपनी सीमा में रहें और बाहर न जायें। शब्द अभ्यास से ये पाँचों तुम्हारे वश में घोड़े और बैल की भांति आ जाते हैं और तुम इनसे यथाउचित कार्य ले सकते हो प्रतिकूल दशा में यह ही तुमको अपना घोड़ा और बैल बनाकर अनुचित काम तुमसे लेने लगेंगे। और तुम्हारा विनाश कर देंगें शब्द योग से तुमको इनके उचित प्रयोग का रहस्य मिल जायेगा।

प्रकृति ने दिन के साथ रात बनायी है अमृत

के साथ विष बनाया है सच्च के साथ झूठ बनाया है इत्यादि । इसका अभिप्राय यह है कि तुमदोनों को यथा उचित प्रयोग करके स्वयं भी लाभ उठाओ और दूसरों को भी लाभ पहुंचाओ अगर तुम रात, बिष और झूठ का प्रयोग नहीं करोगे तो दिन, अमृत और सच्च से यथोचित काम नहीं ले सकते इनको प्रयोग करने के हेतु शब्द अभ्यास द्वारा तुमको अनुभव प्राप्त हो जायेगा कि किस प्रकार इनका उचित प्रयोग करके इनसे उचित काम लें जो लोग शब्द अभ्यास द्वारा इनके उचित प्रयोग का अनुभव नहीं करते हैं वह इनका अनुचित प्रयोग करके स्वयं व दूसरे को हानि पहुंचाते हैं ।

यद्यपि यह बात शत प्रतिशत सत्य है कि शब्द बहुत कुछ है परन्तु वह सब कुछ नहीं है जिसको पूर्ण पुरुष कहते हैं इसका कार्य घटना बढ़ना व रचना करना है । कुछ दिनों इसकी सैर करो और इसका आनन्द लो तुम्हारा जीव इसके सैर से स्वयं भर जायेगा इसमें तुमको फसना नहीं होगा अगर फसोगे तो धोखा खाओगे इसका आनन्द अवश्य लो मगर आनन्द में फंस न जाओ । आनन्द छोड़ कर शान्ति के प्राप्ति की अभिलाषा रखो इसके हेतु मैं तुमको निम्नलिखित कथा सुनाता है—

सम्राट् शाहजहां के समय में एक पैसे में अधेला, दमड़ी और दोकरा और छदाम के टुकड़े होते थे जिससे हमारा अनुमान है कि उसके समय में एक पैसे में चार व्यक्ति भली भान्ति भोजन कर लेते थे इस समय तो एक पैसे को कौन चलावे तीन पैसे की कोई वस्तु नहीं मिलती इससे तुम अनुमान लगा लो कि उस का एक रूपया इस समय के कितने रुपये के बराबर होगा। सम्राट शाहजहां ने बीस बर्ष में बीस करोड़ रुपया खर्च करके ताजमहल बनवाया जो उसके हृदय की विशालता का प्रमाण है उसको गुरु नहीं मिला जो उसको यह रहस्य अनुभव करा दे कि ताजमहल उसके स्वयं का प्रतिबिम्ब हैं। शाह-जहां उस को अपने से भिन्न समझ बैठा और उस पर इतना मुग्ध हो गया कि राजपाट के काम से अचिन्त हो गया इसका परिणाम यह हुआ कि वह बन्दी बना लिया गया।

इसी प्रकार अगर तुम शब्द व प्रकाश जो तुम्हारे स्वयं का प्रतिबिम्ब हैं उसकी सुन्दरताई पर मुग्ध हो गये तो तुम शब्द व प्रकाश के बन्दी बन जाओगे।

आओ तुम को बतावें कि ब्रह्म और पुरुष में क्या अन्तर है तुमको कहीं यात्रा करना है जो तुम्हारा लक्ष्य है। तुम स्टेशन पर आये, देखते हो कि गाड़ी के डिब्बे यात्रियों से खचाखच भरे हुये हैं। घुसने की कहीं जगह नहीं है अगर तुम किसी तरह कूद फांदकर, उस में घुस गये तो निश्चय है कि तुम सुख दुख सहते हुये अपने लक्ष्य पर पहुंच जाओगे। अपने लक्ष्य पर पहुंचने के बाद लक्ष्य को भूल जायेंगे और खा पीकर सो रहोगे इसी प्रकार अगर थोड़ा परिश्रम करके तुम ने अपने अन्तर में शब्द वी प्रकाश प्रगट कर लिया तो निश्चय ही पुर्ण पुरुष को प्राप्त कर लोगे।

यहां कुछ फांद कर गाड़ी में घुस जाने का अभिप्राय अपने अन्तर में शब्द व प्रकाश प्रगट करना है जो ब्रह्म है और लक्ष्य पर पहुंच जाने का अभिप्राय पूर्ण पुरुष है।

तुम्हारे अन्तर में विचारों का प्रवाह तीव्र होने के कारण शब्द व प्रकाश प्रगट नहीं होता। वह कैसे होगा? तुम नदी के किनारे गये देखा

कि नदी की धारा बड़े वेग से प्रवाहित है और जोर से शब्द प्रगट कर रही है। तुम ने नदी में बांध बांध दिया। धारा बांध से टकराने लगी शोर बन्द हो गया और बिजली पैदा हो गई इसी प्रकार शब्द योग द्वारा अपने विचारों के प्रवाहित शोर भी जो तुमको व्याकुल कर रहा है उनको बन्द लगा कर तुम को रोकना होगा। जब बिचारों की धारा शोर करने से रुक जायेगी तो वह ऊपर की ओर उठेगी और तुम में शब्द वो प्रकाश बिजली के रूप में प्रगट हो जायेगा। तुम्हारे अन्तर में सूक्ष्म प्रकाश प्रगट होगा वह बिजली के प्रकाश से कितना अधिक बलवान होगा इसकी तुलना तुम अपने अन्तर में शब्द भी प्रकाश करने पर स्वयं कर लोगे।

किसी पूर्ण पुरुष के सत्संग में जा कर हमारी बात को निरख परख कर विश्वास करो और शब्द योग सीखो। शब्द योग के हेतु हमने बहुत कुछ कहा और बहुत कुछ बाकी रह गया। तुम शब्द योग करो और हमारे लेख में जो कमी रह गयी है उस को पूरा करो। हमारे इस लेख का समर्थना निम्नांकित नज्म से होता है :—

1. खालिक व बन्दे का मसला जब इन्सान के समझ
आ जाता है।
तो वह इसके सैर से खुद आप ही अकुता जाता है॥
2. खालिक दो बन्दे को छोड़कर खुद के फेरे पड़ जाता।
और इस राज को पाने को वह खुद में दाखिल होता है।
3. खुद में समाकर वह खुद वो खालिक दोनों को भूल
जाता है।
वहां पहुंच कर इन्सान खुद अपने तलाश लग जाता है॥
4. इस खुद की तलाश में वह खुद को भी खो जाता है।
पर इसका एहसास तो उसको कुछ-२ रह ही जाता है॥
5. इस खुद एहसास में कुछ दिन अपना वह गुजारता है।

इसके बाद वह खुद ही इस हालत से ऊपर आता हैं॥
6. ऊपर आकर अपने आप में वह खुद गुम हो जाता हैं।
और अपने एहसासे खुद को भी वह खो जाता हैं॥

7. इस हालत में क्या पाता है उसकी समझ नहीं आता है।
बस उसको इतना ही समझ है कि वह कुछ पा जाता है॥
8. बन्दा खुदा व खुद को छोड़कर बाकी जो रह जाना।
इसको भी वह छोड़छाड़ कर अलग थलग हो जाता हैं॥
9. जैसे कतरा नहर में मिलकर अलग नहीं कर पाता हैं।
वैसे किरण सरज से मिलकर उसे उससे एक हो जाता हैं॥

10. इस हालत को खुद वो समझता और खुद को समझाता है।

कुदरते कामिल वो वन्दा में फरक नहीं कर पाता है।।

11. मुर्शिद कामिल की रहमत से इस हालत में आता है। जहां न बन्दा खालिक वो खुद या कुछ ही रह जाता है।

12. इस हालत को हालत हैरत हैरत और कोई कुछ गाता है। मुर्शिद शिव अपने 'कुबेर' को राधास्वामी धाम बताता है।

नोट:— इस लेख के साथ "अनुभव सार प्रकाशक मानवता मन्दिर पढ़ो ताकि शब्द वो प्रकाश को महानता विस्तार पूर्वक समझ सको।

राधास्वामी

इस लेख की लेखिका के पतिदेव एक बार, हजूर परम दयाल जी महाराज के पास आये महाराज जी 'पूछा कैसे आये हो' उस ने कहा पत्नी गर्भवती है ज्योतिषि से पूछने आया था कि लड़का होगा या लड़की, महाराज जी ने फरमाया लड़का होगा। उन ने कहा महाराज, ज्योतिषी ने तो कहा है कि ग्राहों के अनुसार लड़की होगी। हजूर ने फिर कहा नहीं लड़का होगा और लड़का ही हुआ। इस घटना से प्रभावित हो कर उस की पत्नी ने यह लेख लिख भेजा है।

सेक्रेटरी मानवता मन्दिर होशियारपुर

मानवता मन्दिर और मानवतावाद

ले० :— तरसेम लता तलवाड़ (बसी गुलाम हुसैन)

और किसी भी पुस्तक को पढ़ने में वो सचाई नहीं मिलती जो की महाराज फकीर चन्द की पुस्तकों से मिलती है। महाराज फकीर चन्द का मानवता मन्दिर और मानवतावाद संसार भर का सही मार्ग प्रदर्शन कर रहा है।

महाराज जी की शिक्षाएँ सिर्फ अध्यात्मिक क्षेत्र तक ही सीमित नहीं हैं। संसारिक समस्याओं

को सुलझाने में भी सोहल आने में ठीक सावित हुई हैं।

महाराज जी ने सच्चाई और सच्चाई जो कि छुपी हुई थी उसे खोल कर संसार में एक नया प्रकाश पैदा किया है जिससे कि जादू वाद टोनावाद ढोंगबाद इत्यादी खत्म हुआ है।

मानवतावाद की आवाज उठाने वाले इस सर्वप्रिय महाराज फकीर चन्द ने जनता को आशावादो (optimiske) बना दिया है।

यह ख्याल कि इन्सान का रक्षक और उसका सहायक वह खुद है या वो ताकत उसके अपने अन्दर ही है इन्सान को बाहर भटकने से बचाता है।

अगर कहीं पूज्य परम दयाल जी सत्यता को न खोलते तो सत्यता के खोजी इस खोज में बेचेन रहते हुए बरबाद हो जाते। जो भी महाराज का भाषण एक बार सुन लेता है वो अपने में हलका पन महसूस करता है, आशावादी बनता है तथा मानवता वादी बनने का प्रयास करना शुरु करता है।

जरुर छपेगी ।

जो लोग तीर्थ स्थानों पर इतना खर्च करते हैं, तीर्थ यात्रा में इतना धन और समय व्यय करते हैं उन को चाहिए एक बार मानवता मन्दिर में आकर देखें और यहां की शिक्षा ग्रहण करें। वो जरूर महसूस करेंगे कि संसार में सबसे अच्छा तीर्थ स्थान मानवता मन्दिर होशियारपुर ही है।

आय व्यय विवरण राधास्वामी जनरल सत्संग ट्रस्ट राधास्वामीधाम वाराणसी उ.प्र.

२०-१०-७८ से १२-२-८० तक।

क्रम	फन्ड नाम	जमा	नाम
१.	राधास्वामी जनरल सत्संग ट्रस्ट राधास्वामीधाम	४९४१—५३	—
२.	सुरक्षा-समिति फंड	१८३२—८०	—
३.	भंडारा फंड	२००—९०	—
४.	प्रसाद फंड	३३—९५	—
५.	परम दयाल औषधालय	४८—२९	—
६.	पम्पिंग सैट	—	१०८३४—४३
७.	लोक प्रिय संत साहित्य	—	९९—३०
८.	डाक खर्च	—	७४—६०
९.	रिटायर्ड होम	१४०	—
१०.	बनारस स्टेट बैंक गोपीगंज वाराणसी	—	४८—९५
११.	लोन एकाउन्टस—जो देना है		

२९ १९८०,

१.		मोहन लाल गोपीगंज वाराणसी	१००	—
२.	"	बृज लाल मौर्य दौड़ियाही	६००	
३.	"	रामअवध जंगीगंज	३००	—
४.	"	लउधर मौर्य विहंसपुर	१००	—
५.	"	लदद्र मौर्य विहंसपुर	५०	—
६.	"	छोटेलाल जंगोगंज	१९००	—
७.	"	रामराज मौर्य विहंसपुर	१००	—
८.	"	शोभनाथ मौर्य किसुनदेवपुर	११००	—
९.	"	रामचन्द्र विन्द किसुन देवपुर	५००	—
१०	"	विश्वनाथ किसुनदेवपुर	२००	—
	योग		१२१४७, ४७	१०९६९ २८

रोकड़ पास में ११७८, १९

१२१४७, ४७ १२१४७, ४७

पारसनाथ (सेक्रेटरी)
राधास्वामीधाम
वाराणसी

Faqir Library Charitable Trust

(REGD.)

Manvata Mandir, HOSHIARPUR.

INCOME AND EXPENDITURE ACCOUNT

For the year

Ended 31st March, 1980

Year Ended. 31-3-1979		To MANDIR EXPENSES.	
31731—61	,,	Salary and Bonus.	40937—07
60042—74	,,	Printing and Stationery.	61573—04
7436—16	,,	Postage, Telephone.	9110—67
800—00	,,	Audit Fee.	1150—00
540—00	,,	Legal Charges.	310—00
289—10	,,	Travelling & Conveyance Allowance.	292—260
709—00	,,	Free help to deserving students	175—25
7589—66	,,	Frae aid to blind & Orphans.	11375—20
17373—74	,,	Langer.	17642—87
282—70	,,	News paper periodicals.	266—75

3060—90	,, Building repair Maintenance.		5106—40
32[illegible]8—06	,, General Repair Charges.		4924—39
5488—30	,, Electric Charges.		6360—05
3—50	,, Bank Charges.		2—00
10150—21	,, Satsang Charges.		13561—88
862—03	,, Gardening & Water supply charges.		574—09
793—75	,, Sanitation Charges.		1006—69
2371—44	,, Miscellaneous Charges.		4312—20
	To DISPENSARY CHARGES.		
2376—86	,, Medicines.	3807—53	
51058—39	,, Free eye hospital medicines.	79404—01	
			83211—54
	To DEPRECIATION		

466—00	„ Library Equipment.	419—00	
4043—00	„ Eye Hospital Building.	3841—00	
1050—96	„ Sanitary Fitting.	955—49	
416—14	„ Electric Equipment.	[illegible]—00	
1043—70	„ Medical Equipment.	950—80	
564—00	„ Tube-well.	508—00	
336—64	„ Tape-record.	285—00	
—Nil—	„ School Electric Fitting.	349—10	
—Nil—	„ School Building.	6538—51	
—Nil—	„ School Equipment.	1431—36	
231057—34	TOTAL C/o Rs.	31491—71	262392—65

Year Ended.
31-3-1979.

234558—52	By Donation received.	4188[illegible]—72	